International Journal of Information Movement *Vol. 9 Issue III* *(July 2024)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 32-37**

हिन्दी उपन्यासों में किन्नर वर्ग की व्यथा का अध्ययन

नेहा
जूनियर रिसर्च फैलो
पी एच डी हिन्दी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र
Email-dudyneha4@gmail.com

सारांश:
अध्ययन में किन्नरों के जीवन की वास्तविकताओं को चित्रित और इसमें अस्वीकृति, पहचान और दृढ़ता जैसे विषयों को उजागर किया गया है। विभिन्न हिंदी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से, यह अध्ययन किन्नर समुदाय के सामाजिक–राजनीतिक और भावनात्मक पहलुओं को उजागर करता है, यह दर्शाते हुए कि साहित्य समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता पर प्रभाव डालता है। यह पत्र लिंग और पहचान पर व्यापक चर्चा में योगदान देने का प्रयास करता है, और समकालीन हिंदी साहित्य में किन्नरों की प्रस्तुति पर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : किन्नर वर्ग , अबुजा, सामाजिक–राजनीतिक, बुचरा हिजडे ।

1.0 प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में प्राचीनकाल से ही विभिन्न संदर्भों में किन्नरों का वर्णन मिलता है। प्राकृतिक रूप से मनुष्य के रूप में जन्म लेने के बावजूद किन्नर एक अभिशप्त जीवन जीने के लिए मजबूर हैं, तथा साहित्य की मुख्यधारा में अपनी पहचान दर्ज कराने में असमर्थ रहा। किन्नर समुदाय के जीवन की विशेषताओं और विसंगतियों की ओर सुसंस्कृत समाज का ध्यान साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत समय तक नहीं गया, लेकिन धीरे-धीरे समाज में लोगों ने किन्नर समुदाय के बारे में जानने का प्रयास किया है कि यह कौन है और कहाँ से आए हैं ? इसके परिणामस्वरूप लोग इनकी पीड़ा और संघर्ष भरी जीवन व यात्रा के बारे में जानने की रूचि रखने लगे।

वर्तमान में किन्नर वर्ग से संबंधित अत्यधिक मात्रा में विमर्श किए जा रहे हैं ताकि लोग इनकी वास्तविकता को स्वीकार कर लें और समाज में किन्नरों को भी स्त्री-पुरूष की भाँति सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाए। किन्नरों से संबंधित प्रश्नों पर प्रकाश डालने से पहले हमें विमर्श का अर्थ समझना आवश्यक है। 'विमर्श का अर्थ है किसी स्थिति में सुधार या वर्ग आदि के अभ्युत्थान के लिए होने

वाला वैचारिक मंथन जैसे 'दलित' विमर्श, 'स्त्री विमर्श' आदिवासी विमर्श तथा किन्नर विमर्श।[i]

किन्नरों से संबधित विचार विवेचन, परामर्श अर्थात् किन्नर समुदाय से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं की चर्चा, विचार या विमर्श के माध्यम से किन्नरों के जीवन संघर्ष एवं उनके अस्तित्व पर मंथन करना ही 'किन्नर विमर्श' है। साधारण शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि किन्नरों के बारे में विमर्श के माध्यम से उनकी पीड़ा, जीवन संघर्ष, उनके साथ होने वाले भेदभाव एवं उनका जन्म कैसे हुआ आदि पहलुओं के बारे में मंथन करना ही 'किन्नर विमर्श' है।

किन्नर वर्ग की व्यथा पर प्रकाश डालने से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि तथा 'किन्नर' शब्द का प्रयोग मनुष्य की किस जाति या वर्ग के लिए प्रयुक्त होता है। हिन्दी साहित्य पर नजर डाले तो आमतौर पर जो लैंगिक दृष्टि से विवादित समाज के लोग, जिनको सामान्य भाषा में 'हिजड़ा' नाम लेकर जाना जाता है। किन्नर अथवा हिजड़ों से अभिप्राय ऐसे लोगों से है जिनके जननांग पूरी तरह से विकसित नहीं होते। इन्हें समाज में लोगों द्वारा उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता है एवं इनका उपहास उड़ाया जाता है, लोगों द्वारा इनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है और यह हमारे समाज के लिए मनोरंजन का साधन बन गए हैं। "लेकिन हमारे समाज में मानव प्रजाति के इन दो लिंगों के अलावा भी एक और प्रजाति का अस्तित्व है। जो न पुरुष होता है न स्त्री। न तो नर है न नारी। जो न संभोग कर सकता है न ही गर्भ धारण कर सकता है। जिसे हमारा समाज किन्नर, हिजड़ा या छक्का कहता है। जिसे आदिकाल से ही हमारे मानव समाज ने उपहास का पात्र या मनोरंजन का साधन बना रखा है, जिन्हे इस समाज से हमेशा उपेक्षा मिली है। बावजूद इस उपेक्षा, उपहास के इस तीसरी योनि का अस्तित्व हमारे समाज में है और हमेशा रहेगा समाज में पहले की अपेक्षा यदि वर्तमान समय की बात की जाए तो लोगों ने इनकी वास्तविकता को स्वीकारना शुरू कर दिया है। हिजड़ों (किन्नर) को चार भागों में विभाजित किया गया है – बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा।

बुचरा हिजड़े जन्म से ही हिजड़े के रूप में होते हैं, यह न तो पुरुष होते हैं न स्त्री इसलिए इनको वास्तविक हिजड़े भी कहा जाता है। 'नीलिमा' किसी कारणवश स्वयं को हिजड़ा बनने के लिए समर्पित कर देते हैं। 'मनसा' शरीर के स्थान पर मानसिक तौर पर खुद को विपरीत लिंग अथवा अधिकतर स्त्री लिंग के अधिक निकट महसूस करते हैं, तथा 'हंसा' शारीरिक कमी या नपुंसकता आदि यौन कमियों के कारण बने हिजड़े होते है। कुछ लोग धन की आड़ में स्वयं को हिजड़े का रूप देकर धन कमाते हैं, इन्हें नकली हिजड़ा अर्थात् 'अबुजा' कहा जाता है जो वास्तव में पुरुष होते हैं लेकिन धन कमाने

के लिए हिजड़े का स्वांग रख लेते है। हमारे समाज में जब भी कोई बच्चा हिजडे (बुचरा, के रूप में जन्म लेता है तो उस बच्चे को परिवार के सदस्यों स्वीकार नहीं किया जाता, अपितु उस बच्चे को त्याग दिया जाता है, क्योंकि उनको ऐसा लगता है कि वह हमारे परिवार के लिए एक कलंक के समान हैं अर्थात् परिवार के सदस्य यह सोचते हैं कि यदि किसी को पता लग गया कि हमारे परिवार में किन्नर पैदा हुआ है तो उससे हमारे परिवार की प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान में कमी होगी, इसलिए प्रायः ऐसे लोग उस बच्चे को त्याग देते हैं अन्यथा किसी किन्नर को सौंप देते हैं। "मै हिजड़ा हूँ.....ठीक है, पर इसमें मेरा क्या कसूर? हिजड़ा होने में मेरी अम्मा बल्कि पिताजी का भी तो दोष नहीं है, फिर मेरे साथ ही ऐसा दुर्व्यवहार क्यों? लोग अपने विकलांग बच्चे को पाल लेते हैं, पर एक हिजड़ा बच्चे को नहीं क्योंकि हिजड़ा बच्चा होना वे अपनी आन, बान, शान के खिलाफ समझते हैं।"[ii] 'मै पायल' उपन्यास में पायल के पिता पायल के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए कहते हैं-"ये जुगनी। हम क्षत्रिय वंश में कलंक हुई है, साली हिजड़ा है....।"[iii] समाज का पहला घाट यहीं से शुरू होता है, अपने ही परिवार से अपने ही लोगों द्वारा उसे अपनों से दूर किया जाता है, वह एक बार भी नहीं सोचते थे कि बच्चे का त्याग करने के पश्चात् उसका जीवन खतरे में पड़ जाएगा, और यही से उस बच्चे कि संघर्ष भरी एवं पीड़ायुक्त यात्रा शुरू हो जाती है। समाज में किन्नरों को लेकर लोगों ने अपने मन में ऐसी मानसिकता बना ली है कि वह उन्हें उपेक्षित तथा घृणा की दृष्टि से देखते हैं। "घर, परिवार, समाज से बहिष्कृत, तिरस्कृत और त्रासदी लिप्त हुए। जब तक जीवन है त्रासदियाँ उनके साथ है, वह जो न नर है, न नारी है तो सिर्फ एक 'हिजड़ा यही उसकी पहचान है, यही कटु सत्य है।"[iv] अतः समाज में जब तक स्त्री-पुरुष है किन्नर भी होंगे, तथा इनकी वास्तविकता को लोगों द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिए, यह इस समाज की एक कड़ी यह लोग अपना पेट पालने के लिए खुशी के अवसर पर लोगों के घर जाकर नाच-गाकर तथा उनको आशीर्वाद देकर वहां से नेग लेकर अपना गुजार करते हैं। समाज में किन्नरों को उपेक्षित एवं घृणा का पात्र मानकर इनके साथ भेदभाव करते हैं। किन्नरों को राजनीति में भाग लेने का अधिकार नहीं है, एवं शिक्षण संस्थाओं में भी इनके लिए सीमित मात्रा में साधन उपलब्ध कराए गये हैं, इसलिए अधिकतर मात्रा में हिजड़े एक समूह बनाकर खुशी के मौके पर लोगों के घरों में गा-बजाकर अपनी आजीविका चलाते हैं। "गा-बजाकर और बधाई देकर अपना पेट पालने वाले हिजड़े बधाई देकर अपना पेट पालने वाले हिजड़े के लिए आज के आधुनिक और उत्तर आधुनिक समाज में आजीविका के अवसर पर जहाँ और भी सीमित होते जा रहे हैं। वहीं यह भी देखा गया है कि

अपराधिक किस्मों के लोग हिजड़ों की परम्परागत बधाईगिरि में सेंध लगा रहे हैं। हिजड़ा बन कर छोटा-मोटा अपराध भी वह कर रहे हैं, जबकि दोष हिजड़ों पर लग जाता है इसी प्रकार अपवाद हिजड़े ऐसे भी होते हैं जो हिजड़ा बनने के नाम पर अमानवीयता पर उत्तर आते हैं।[v] "हमारे समाज में ऐसे लोग भी हैं जो हिजड़े का वेश बनाकर धन के लोभ में लड़ाई भी कर देते हैं, लेकिन इल्जाम हिजड़ो पर आता है, इसलिए लोगों को इस मामले में सजग रहना चाहिए। एक किन्नर की केवल यही इच्छा होती है कि उसे भी सामान्य मनुष्यों की भाँति जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता है। परिवार तथा समाज का सहयोग प्राप्त न होने से एक किन्नर की यह आशा कभी पूर्ण नहीं हो पाती कि उनकी वास्तविकता को स्वीकारा जाए तथा समाज से सम्मानजनक व्यवहार प्राप्त हो। किन्नरों को सबसे अधिक तिरस्कृत उनके परिवार द्वारा ही किया जाता है, जिसकी वजह से वह पूरा जीवन शापित ढंग से जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इसके संदर्भ में प्रसिद्ध कथाकार महेन्द्र भीष्म लिखते हैं-"प्रत्येक हिजड़ा अभिशप्त है, अपने परिवार से बिछड़ने के बाद दंश से, समाज का पहला घात उस पर शुरू होता है। अपने ही परिवार से अपने ही लोगों द्वारा उसे अपनों से दूर किया जाता है। परिवार से विस्थापन का दंश सर्वप्रथम उन्हें ही भुगतान होता है।"[vi] समाज में लोग किन्नरों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि इन्हे कुछ महसूस नहीं होता। किन्नरों को समाज द्वारा किए जाने वाले भेदभाव एवं अमानवीय व्यवहार को सहना पड़ता है, लेकिन यह ठीक नहीं है इन्हें भी अन्य लोगों की भाँति दु:ख का अनुभव होता है। इसके माध्यम से किन्नर जीवन की व्यथा को दर्शाया गया है। "इन्हे जन्म से ही सामाजिक निर्वासन झेलना पड़ता है सामान्य मनुष्य की तरह इन्हें भी सुख दु:ख का अहसास होता है, प्रेम और विरह भी आम मनुष्यों की तरह महसूस होता है।"[vii] समाज में संकीर्ण मनोवृत्ति वाले लोगों द्वारा ही नहीं अपितु किन्नर समुदाय द्वारा भी किन्नरों का आर्थिक शोषण किया जाता है। सिमरन अपने गुरूओं द्वारा आर्थिक शोषण का शिकार होती है। किन्नर समुदाय को प्रस्तुत करते हुए डॉ. मोनिका शर्मा जी लिखती है-"हम किन्नर पाई पाई को तरसते हैं, आर्थिक रूप से भी शोषण होता है। जब तक पैसा पास होता है, तब तक हर रिश्ता हमसे जुड़ना चाहता है। जब रुपया खत्म हो जाता है तब तक जिन्दगी तमाशा बन जाती है, कोई भी आकर हमें गाली-गलौच करके निकल सकता है।"[अपपप]

किन्नर समुदाय के बीच टकराव एवं संघर्ष देखने को मिलता है। समुदाय में शामिल होने के बाद किन्नरों को अपने किन्नर गुरू की आज्ञा के अनुसार चलना पड़ता है। किन्नरों को संकीर्ण एवं उपेक्षित नजर से

देखने वाले लोग एक तरफ उन्हे मनोरंजन का साधन समझते है, वहीं दूसरी और उनके द्वारा अपनी हवस पूरी करते हैं। "सबसे ज्यादा यौन शोषण हमारा ही होता है। कैसी-कैसी मानसिकता के लोग हैं, धिक्कार है ऐसे समाज पर जहाँ पर ऐसे इज्जतदार लोग रहते हैं जो एक हिजड़े को भी हवस मिटाने का साधन मात्र समझते हैं।"[ix]

किन्नर समुदाय में जिन्होंने अपने इस जीवन से कुछ अलग हटकर शिक्षा के क्षेत्र में कदम बढ़ाया, उनके लिए समाज में लोगों ने तरह-तरह के सवाल उठाए तथा इनका उपहास उड़ाया गया। लोगों के मन में किन्नरों को लेकर एक ऐसी मानसिकता बन गई है कि किन्नर सिर्फ नाचने-गाने के लिए हैं, शिक्षा के क्षेत्र में इनका कोई काम नहीं है, और अगर यदि कोई किन्नर साहस करके अपने कदम आगे बढ़ाता था तो उसे कैद कर लिया जाता था। ''मै एक छोटे से कमरे में कैद कर ली थी। एक व्यक्ति इस जीवन में अपने अनुसार स्वतन्त्र जी नहीं सकता क्या ? मुझे मालूम है कि मैं एक किन्नर हूँ, तो क्या किन्नर होना अपराध है, जो उसे उसके व्यवहार के विपरीत कार्य करने के लिए विवश किया जा रहा है। क्या एक किन्नर को बधाई होली के अलावा अन्य कार्यदायित्व नहीं सौंपे जा सकते। मै टॉकीज में प्रोजेक्ट चलाती हूँ। इससे पहले अन्य छोटे-मोटे कार्य भी मैने किए हैं, फिर मुझे बाध्य किया जा रहा है कि मै इनकी तरह ताली पीटूँ, ढोलक बजाऊँ, नाचूँ और बधाई गाऊँ''[x] लेकिन आज वर्तमान समय मे किन्नर वर्ग के लोग भी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, यह हमारे समाज के लिए एक प्रकार की प्रेरणा का स्त्रोत है। अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करते हुए भी यह उन्नति की और अग्रसर हो रहे हैं तथा नौकरी के पद भी संभाल रहे हैं। पहले की अपेक्षा आज वर्तमान में लोगों के मन में किन्नरों के प्रति मानसिकता बदल रही है, लोगों ने इनकी वास्तविकता को स्वीकारना शुरू किया है तथा इनकी समस्याओं पर भी सोच-विचार एवं शोध-कार्य हो रहे है। आज किन्नर समुदाय की स्थिति पहले की अपेक्षा काफी उन्नत है लेकिन पूरी तरह से नहीं।

किन्नर विमर्श हिन्दी साहित्य में परिपक्व अवस्था में है। लोगों की मानसिकता बदल रही है, साहित्यकार किन्नरों के प्रति सजग हो रहे हैं, तथा अनके रचनाओं यमदीप, तीसरी ताली, गुलाममंड़ी पोस्ट बॉक्स नं0 203 नाला सोपारा, किन्नर कथा, मै पायल आदि द्वारा निरन्तर अपना योगदान दे रहे हैं।

अत: ''अभी भी साहित्य में किन्नर विमर्श की आवश्यकता समझी जा रही है, अभी भी साहित्य में किन्नर समाज की समस्याओं और पीड़ाओं को विभिन्न पक्षों एवं दृष्टियों से विश्लेषित करने की आवश्यकता है। साहित्य के माध्यम से किन्नर वर्ग की आवाज को जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है

तथा साहित्य ही किन्नर विमर्श को आगे बढ़ाने में 'मील का पत्थर' साबित हो सकता है।[xi]

2.0 संदर्भ ग्रन्थ सूची

---

i भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंग विमर्श से विजेन्द्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गोंड़, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2016, पृष्ठ–148

ii महेन्द्र भीष्म, मै पायल, अमन प्रकाशन, कानपुर 2016, पृष्ठ संख्या–37

iii मै पायल, महेन्द्र भीष्म–पृष्ठ संख्या–24

iv किन्नर कथा, महेन्द्र भीष्म, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली–पृष्ठ सं–51

v थर्ड जेंडर: कथा आलोचना, वॉमुमय (त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका) अंक जुलाई–दिसम्बर 2017, पृष्ठ संख्या–18

vi किन्नर कथा, महेन्द्र भीष्म, सामायिक प्रकाशन, पृष्ठ संख्या– 41–42

vii किन्नर कथा (उपन्यास), (महेन्द्र भीष्म, 2010)

viii अस्तित्व की तलाश में सिमरन, डॉ0 मोनिका शर्मा– पृष्ठ सं.–97

ix अस्तित्व की तलाश में सिमरन, डॉ0 मोनिका शर्मा– पृष्ठ सं.–35

x मै पायल, महेन्द्र भीष्म, अमन प्रकाशन, 2016–पृष्ठ सं.–97

xi साहित्य में किन्नर विमर्श की आवश्यकता, कीर्तिमालिक।